International Journal of Applied Research 2017; 3(6): 711-713

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(6): 711-714
www.allresearchjournal.com
Received: 01-04-2017
Accepted: 02-05-2017

Dr. Praveen Kumar
Ex-PhD. Scholar,
Dept. of History, C.C.S.
University Campus, Meerut,
Uttar Pradesh, India

Correspondence
Dr. Praveen Kumar
Ex-PhD. Scholar,
Dept. of History, C.C.S.
University Campus, Meerut,
Uttar Pradesh, India

1857 की क्रान्ति में सफाई कामगार समुदाय की महिलाओं का योगदान

Dr. Praveen Kumar

प्रस्तावना

वाल्मीकि, चूहड़ा, लालबेगी, हलालखोर, हेला, बसोर, धानुक, महार आदि जातियाँ परम्परागत रूप से सफाई कार्य से जुड़ी रही हैं। भारतीय समाज में ये जातियाँ सामाजिक स्तर में सबसे निम्न मानी जाती रही हैं लेकिन इन जातियों के लोग प्रारम्भ से ही बहादुर एवं स्वाभिमानी रहे हैं। इस समुदाय के योगदान की गाथा इतिहास में भरी पड़ी है। इस समुदाय के पुरूषों के साथ–साथ महिलाओं ने भी वीरतापूर्ण कार्यो से अचंकित किया है।

1857 की महान घटना को तत्कालीन औपनिवेशिक शासकों ने गदर कहा था, हमारे देशवासियों के लिए यह प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम से कम नहीं था। इस प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम मे लाखों भारतीयों ने अपनी कुर्बानी दी थी।[1] 1857 की क्रांति मे दलित समाज का योगदान भी कम नहीं था इस पर काफी कुछ लिखा जा चुका है और अभी भी शोध जारी है। इसी दलित समाज की महिलाओं में से भी अति दलित कहें जाने वाली सफाई कामगार समुदाय की महिलाओं ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन महिलाओं ने न केवल क्रांति में भाग लिया था अपितु कुछ स्थानों पर क्रांति का नेतृत्व भी किया था। इन महिलाओं में प्रमुख महावीरा देवी थी।[2]

महावीरा देवी मूलरूप से जनपद कोटा राजस्थान की निवासी थी। गाँव मुण्डभर, तहसील कैराना, जनपद मुजफ्फरनगर (अब शामली) में महावीरा देवी की ससुराल थी। महावीरा देवी के पति गाँव मुण्डभर निवासी श्री अजब सिंह जब रोजगार की तलाश में कोटा राजस्थान में थे उसी समय महावीरा देवी से उनका विवाह हुआ था। विवाह के बाद महावीरा देवी अपनी ससुराल गाँव मुण्डभर में आकर रहने लगी। सगवा सिंह अजब सिंह का छोटा भाई था। दोनों भाई मुजफ्फरनगर शहर में काम करते थे।[3] महावीरा देवी क्योंकि बहुत निर्धन एवं तथाकथित अछूत परिवार में पैदा हुई थी और भारतीय इतिहास का यह ऐसा समय था जब दलितों, महिलाओं का शिक्षा प्राप्त करना तो स्वप्न की बात थी, सवर्ण समाज की महिलाऐं भी शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाती थी अतः वह अशिक्षित थी। परन्तु फिर भी उनकी बुद्धि बहुत विलक्षण थी, शौर्यता तथा निर्भीकता उनकी विशेषता थी। बाल्यावस्था से ही साहसी, शक्तिशाली होने के कारण वह अपने नाम के अनुसार ही तेज स्वभाव की महिला थी। महावीरा देवी यद्यपि अछूत जाति मे जन्मी थी तथापि वह बहुत साफ सुथरी रहती थी तथा अपने समाज की अन्य महिलाओं को भी साफ–सुथरा रहने को प्रेरित करती थी। महाबीरी देवी ने अपनी जाति की 22–23 महिलाओं का एक समाज सुधार संगठन बना रखा था जिसका कार्य था सफाई के पेशे को छुड़वाना तथा अन्य स्वच्छ व्यवसाय कराना, महिलाओं व बच्चों को साफ–सुथरा रखना, जूठन स्वीकार न करना, जमींदारों और अन्य प्रभावशाली लोगों से जो निर्धनों को सताते थे, के जुल्मों से समाज की रक्षा करना तथा सम्मान के लिए जीना व सम्मान के लिये मरना।[4] वीरांगना महाबीरी देवी ने मानो दीन–दुखियों के लिए ही जन्म लिया था। उन्होनें जीवन पर्यन्त न्याय के लिये लड़ने की प्रतिज्ञा ली थी और अपने को दीन–दुखियों और देश सेवा के लिए समर्पित कर दिया था। धीरे–धीरे उनका यश चारों और फैलने लगा और जगह–जगह उनकी शौर्यता निर्भीकता तथा समाज के प्रति मर मिटने की भावना की चर्चा होने लगी थी।[5]

चूंकि महावीरा देवी के पति अजब सिंह व देवर सगवा सिंह मुजफ्फनगर शहर में काम करते थे। मुजफ्फरनगर में गदर की आग भड़कने पर अंग्रेजों ने अजब सिंह व सगवा सिंह को भी पुरकाजी के खड़का बाग में फांसी दे दी थी। जब महाबीरी देवी को इसकी सूचना मिली तो वह उन दोनों की मौत का बदला लेने के लिए तथा अजब सिंह व सगवा सिंह की लाश लेने के लिए अपने समाज की अन्य 22–23 महिलाओं को साथ लेकर गाँव मुण्डभर से मुजफ्फरनगर के लिए निकली। ये सभी महिलाएँ अपने हाथों में गंडासे, बल्लम, बर्छी और लाठियाँ लिये हुए थी।

जैसे ही ये महिलाऐं मुण्डभर एवं मुजफ्फरनगर के बीच पहुँची, ब्रिटिश सेना की एक टुकड़ी की भिडत इनसे हो गयी। ये टुकडियाँ उस समय मुजफ्फरनगर में भड़के गदर को दबाने के लिए जगह–जगह घूम रही थी।[6]

जैसे ही महावीरा देवी एवं उसकी सहयोगी अन्य महिलाओं की नजर ब्रिटिश सेना की उस टुकड़ी पर पड़ी उन्होनें अचानक उन पर आक्रमण कर दिया। घमासान लड़ाई होने लगी। अंग्रेज आश्चर्यचकित रह गये। अंग्रेजों को यह उम्मीद न थी कि गाँव की अनपढ़ महिलाऐं उन पर आक्रमण करेंगी। अनेक अंग्रेज महावीरा देवी के हाथों मारे गये।[7] अंग्रेजों ने देखा कि ये टोली मात्र तलवारों के वारों से काबू नहीं आयेगी तो उन्होनें चारों तरफ से घेर कर इस जत्थे पर गोलियों की बौछार कर दी । नतीजतन अंग्रेजों की गोलियों से इनका शरीर छलनी–छलनी हो गया और महावीरा देवी अन्य 22 महिला साथियों के साथ मातृभूमि की रक्षा की खातिर शहीद हो गयी।

रणवीरी देवीः– 13 मई 1857 को पूरा जनपद मुजफ्फरनगर क्रान्तिमय हो गया। मुजफ्फरनगर के आस–पास के क्षेत्रों में भी प्रबल विद्रोह था। इस समय तहसील शामली विद्रोह का प्रमुख केन्द्र था। शामली में विद्रोह का नेतृत्व चौधरी मुहर सिंह कर रहे थे। चौधरी मुहर सिंह स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी व्यक्तियों में से थे, ये तलवार के धनी थे और घुड़सवारी इनका शौक था। चौधरी मुहर सिंह ने एक अच्छी फौजी टुकड़ी खड़ी कर ली। क्रांति के इस पवित्र यज्ञ में क्षेत्र की महिलाएं भी पीछे नहीं थी। इसके नेतृत्व में अनेक महिलाएं स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ी और वे सभी भारत माँ की स्वतंत्रता हेतु संघर्ष के लिए तैयार थी। इन्हीं महिलाओं में से एक थी रणबीरी देवी वाल्मीकि जो शामली की ही थी।[9]

मि0 सी0 ग्रान्ट ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट ने जब जिला प्रशासन की बागडौर संभाली तभी वह विद्रोह को दबाने में असफल रहा और इस हालात में चौधरी मुहर सिंह ने शामली तहसील पर मई माह में ही अधिकार कर लिया। वहॉ के तहसीलदार इब्राहित खाँ ने भाग कर जान बचाई। तहसील पर चौधरी मुहर सिंह का कब्जा लगभग तीन माह तक रहा।[10]

अगस्त माह तक शामली तहसील पर मोहर सिंह का कब्जा था। अगस्त माह में ही मि0 एडवर्ड ने अधिक देर नहीं की, उसने मि0 सी0 ग्रान्ट ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट के नेतृत्व में फौजी टुकड़ी भेजी। इसकी सूचना चौधरी मुहर सिंह को भी मिल गयी तब उन्होनें शामली में जंग होने की हालत में तथा शामली को बर्बादी से बचाने के लिये अपने क्रान्तिकारी वीरों और वीरांगनाओं के साथ जिनमें रणवीरी देवी भी थी, बनतगांव के पास पहुंचकर मोर्चा जमा लिया। इसी बीच क्रान्तिकारी और अंग्रेजों के बीच संघर्ष होने लगा। चौधरी मुहर सिंह और उसके साथी, अंग्रेजों का सिर अपनी तलवारों से काटने लगे, परन्तु चूँकि अंग्रेजी सैनिक आधुनिक हथियारों से लैश थे अतः उन्होनें इन क्रांतिकारी पुरूषों और महिलाओं पर गोलियाँ बरसानी प्रारंभ कर दी जिसमें बहुत ही महिलाएं भी आजादी की भेंट चढ़ गई जिसमें रणवीरी देवी भी थी। इस प्रकार इस दलित वीरांगना ने भारत भूमि की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की बलि देकर न केवल समाज का ही सम्मान बढ़ाया बल्कि महिलाओं के लिए भी उदाहरण प्रस्तुत किया।[11]

आशा देवी गुर्जर और अज्ञात वाल्मीकि महिलाएंः– 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में जनपद मुजफ्फरनगर की महिलाओं ने प्रमुख भूमिका निभाई थी। यहाँ की हजारों महिलाएं इस विद्रोह के दौरान शहीद हो गयी थी। सभी जातियों की महिलाएं जैसे– ब्राह्मण, गड़रिया, गुर्जर, सिक्लीगर, वाल्मीकि, जाट और मुसलमान आदि की महिलायें इनमें शामिल थी। यदि ये महिलाएं किसी राजा की रानी या राजमाता होती तो झांसी की रानी की तरह विख्यात होती। क्योंकि ये सब साधारण किसान और मजदूर घरानों की बहु–बेटियां थी, अतः इतिहासकार उनके नाम भूल कर आगे की ओर चले गये।[12] ऐसी ही अज्ञात वाल्मीकि समाज की महिलाओं ने भी मुजफ्फरनगर की आशा देवी गुर्जर के नेतृत्व में फिरंगियों के विरूद्ध संघर्ष किया था और शहीद हुई।

श्रीमती आशा देवी गुर्जर के पति मेरठ सैनिक विद्रोह में अग्रणी स्थान पर थे। जो पहला जत्था मेरठ से चल कर दिल्ली विजय के लिए पहुंचा था, वह उसके सदस्य थे। 11 मई को ही आशा देवी को यह समाचार मिल गया था । उसकी ससुराल कैराना तहसील के ही किसी गॉव में थी । उसने संकल्प लिया था कि फिरंगियों के विरूद्ध संघर्ष में वह अपने पति का अनुसरण करेगी। उसने नवयुवतियों की एक सेना संगठित की जिसमें 265 युवतियों ने अंग्रेजों को मारने या मरने की प्रतिज्ञा करके आशादेवी का नेतृत्व स्वीकार कर लिया। इन्हीं 265 युवतियों में वाल्मीकि समाज की भी महिलाऐं थी। इन्होनें 13 मई को कैराना पर और 14 मई को शामली पर हल्ला बोलकर सभी सरकारी कार्यालय आग की लपटों में झोंक दिये। जो भी अंग्रेज दिखाई देता मौत के घाट उतार दिया जाता। अराजकता फैलने से रोकने के लिए 28 दिनों तक पूरी तहसील की सुव्यवस्था इन्होनें स्थापित की। अनावश्यक रक्तपात रोकने का हर संभव प्रयास किया गया। सुखद आश्चर्य है कि पूरी तहसील की जनता ने इस महिला के प्रशासनिक आदेश का न केवल पूर्ण समर्थन ही किया बल्कि हर तरह का सहयोग भी दिया।

दुःख के साथ कहना पड़ता है कि प्रतिक्रान्ति का प्रारम्भ होने पर जब अंग्रेजी शासन लौट कर आया तो आशा देवी को उसकी 11 अन्य सहेलियों के साथ अंग्रेजों ने फांसी पर चढ़ा दिया। बाद में उन्होनें भारतीय गद्दारों से पता लगवाया कि आशा देवी की सेना में कौन–कौन सी महिलाएं भर्ती थी। गद्दारों ने प्रायः सभी का पता बता दिया और ये 265 वीरांगनाऐं गोलियों से उड़ा दी गयी। इस प्रकार इन्हीं महिलाओं में शामिल उन अज्ञात वाल्मीकि समाज की वीरांगनाओं ने भी अपनी शहादत क्रान्ति की भेंट चढ़ा दी और वे इतिहास में अमर हो गयी।[13]

लाजो देवीः– एक कहावत है कि हर सफल पुरूष के पीछे स्त्री का हाथ होता है। इस स्त्री के कई रूप हो सकते है, जैसे माँ, बहन, या फिर पत्नी । यहीं कहावत 1857 की क्रान्ति की प्रथम चिंगारी मातादीन पर खरी उतरती है। 10 मई 1857 की क्रान्ति की ज्वाला अचानक कैसे भभक उठी, इस पर ध्यान देते ही जिज्ञासा होती है कि आखिर कौन सी ऐसी बात थी जिसके कारण क्रान्ति का आरम्भ हुआ। वास्तव में सभी अनुसंधानों से जो बात निकलकर आयी थी वह चर्बीदार कारतूस ही थे जिनके कारण अचानक सैनिकों ने विद्रोह कर दिया था और लगभग पूरे देश में क्रान्ति भभक उठी थी।

वास्तव में मातादीन को चर्बीदार कारतूसों की जानकारी उसकी पत्नी से प्राप्त हुई थी जिसका नाम था– लाजो देवी। माता दी की पत्नी लाजों भी अंग्रेजी सैनिको की छावनी में सफाई का काम करती थी। यह बहुत ही स्वाभिमानी स्त्री थी। मेहनत मजदूरी से पेट भरना उसे मंजूर था, हराम की कमाई से नहीं।[15]

एक दिन एक अंग्रेज अफसर जो अच्छी खासी हिन्दी में बात कर लेता था। लाजों के रूप सौन्दर्य पर मर मिटा। लाजो जब भी उसके टैन्ट की सफाई के लिए आती तो वह उससे अभद्र बातें करता । परन्तु लाजो की आँखों में उसके प्रति घृणा देखकर वह कोई हरकत करने की हिम्मत न कर पाता।

एक दिन लाजो ने उसे हिन्दू धर्म और सतीत्व के बाबत बताया। गौरे अंग्रेज अफसर ने सोचा– यह समझदारी की बातें करती है तो इसे समझदारी की बातों से ही काबू में लाया जाए। तब उसने लाजों को बताया कि यह देश हमारा गुलाम है। यहॉ के पुरूष जब हमारे गुलाम है तो उनकी औरतें भी हमारी गुलाम है। तुम तो जाति से भंगी हो। ब्राह्मण, बनिये, ठाकुर, राजपूत सभी हमारे

दिये गाय और सुअर की चर्बी लगे कारतूसों को मुंह से खोलते हैं। फिर तुम किस धर्म की बात करती हो। मैं चाहूँ तो तुम्हारे साथ जबरदस्ती भी कर सकता हूँ।[15]

लाजों उसकी बातों से बहुत आहत हुई। वह घर आकर मातादीन से बोली–चाहे जान चली जाए। मैं अंग्रेजों की गुलामी नहीं करूंगी और यदि तुम मुझसे प्यार करते हो, तो इस कारतूस की बात को जिसमें गाय और सुअर की चर्बी लगी है, पूरी छावनी में सबको बता दो।

मतादीन बोला– इसमें जान जाने का खतरा है। अंग्रेजों को पता चल गया तो मेरे साथ तुम्हारा भी न जाने क्या हाल करेंगें। लाजों बोली–डरों मत । मैं तुम्हारे साथ ही दस–बीस अंग्रेजों को मारकर मरूंगी। लाजों के स्वर में स्वाभिमान की झलक थी।[16]

और सच में ही जब अंग्रेजो ने खलासी काण्ड के अन्तर्गत मातादीन को फांसी दी इस वीर महिला को भी उसी दिन फांसी पर चढ़ा दिया गया था। धन्य है वीर महिला लाजो देवी जो 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की वास्तविक प्रथम चिंगारी थी।[17]

कानपुर का सतीचौरा कांड और देशभक्त वाल्मीकि महिलाएं

1857 ई0 के गदर के दौरान 27 जून सन् 1857 ई0 को कानपुर के अंग्रेज नाना साहब की सुरक्षा व्यवस्था में घाट तक पालकी, घोड़ो, हाथी द्वारा पहुंचाएं गये। व्हीलर की पत्नी, दो पुत्री, गंगा तट तक हाथी पर गई। इवार्ट नामक सैनिक अधिकारी पालकी में जा रहा था कि रास्ते में उसी के विद्रोही सैनिक मिले और ताना मारते हुए कहा– ''कहिए कर्नल साहब आज की परेड़ कैसी है ? सभी की वर्दियां तो ठीक है ना ? एक विद्रोही सिपाही ने उसकी पालकी से नीचे खींच लिया और उसकी हत्या कर दी।

अंग्रेजो के पलायन को देखने के लिए कानपरु की जनता गंगा तट पर पहुंची। 9 बजे सभी नावों में बैठ गये। गंगा घाट पर कानपुर क्रान्ति के सेना नायक टीका सिंह, अजीमुल्ला तथा तात्याटोपे आदि खड़े थे। इसी समय नाना का एक घुड़सवार आया और उसने व्हीलर को विदाई के लिए नाना का शुभ संदेश दिया इसे देखकर एक सिपाही ने बिगुल बजा दिया। लोचन मल्लाह ने बिगुल सुनकर अपने साथियों से नाव छोड़ देने को कहा। मल्लाह लोग गंगा में कूद पड़े, कर्नल माब्रेटामसन जिस नाव पर था, उस नाव के अंग्रेजों ने मल्लाहो पर गोलियां चलायी। लोचन मल्लाह ने क्रांतिकारियों को एक नाव में बिठाकर अंग्रेजों का पीछा किया। क्रांतिकारिया की नावँ उथले पानी में फंस गयी। क्रांतिकारी नावं छोड़कर भाग गये। अंग्रेजों को नावँ में खाने को कुछ भी न मिला। बंदूके गोलियाँ आदि अन्य सामान अंग्रेजों के हाथ लगा। लोचन मल्लाह के आदमियों ने तुरंत दूसरी नावं का प्रबन्ध किया। आगे चलकर अंग्रेजों की नाव उथले पानी मे फंस गयी। 14 अंग्रेजों का दल खड़ी भीड़ से निपटने के लिए उतर पडा। तभी क्रांतिकारियों की नावं आ गयी। क्रांतिकारियों ने टामसन की नावं को पकड़ लिया। 80 अंग्रेज, स्त्री, पुरूष पकड़ कर कानपुर लाए गए। बच्चों और स्त्रियों को अलग कर दिया गया। अंग्रेजों को लोचर मल्लाह की सूझबूझ से क्रांतिकारियों ने फांसी पर लटका दिया। कानपुर की यह घटना सती चौरा कांड के नाम से इतिहास में अंकित है।[18]

सती चौबा घाट कानपुर से जो अंग्रेज पुरूष महिलाएं व बच्चे पकड़े गये थे। उन सबको बीबी घर में रखा गया था। इन सबकी संख्या 125 बतायी गयी थी। उन अंग्रेज स्त्री बच्चों की देखभाल के लिए वाल्मीकि (भंगी) जाति की स्त्रियों को रखा था। एक अंग्रेज महिला ने एक भंगी स्त्री को दो सोने की मुहरें और एक पत्र इलाहाबाद भेजने के लिए दिया था। उस भंगी स्त्री ने अंग्रेज महिला के पत्र को पहरे पर तैनात पहरेदार को दे दिया। पहरेदार पेशवा का वफादार सैनिक था। उसने अंग्रेज महिला के पत्र को पेशवा के उच्च अधिकारी को दे दिया । भंगी स्त्री को कोड़े मारे गये जिससे वह मर गई।[19]

इसके अतिरिक्त लखनऊ की कल्लाबाई, मुफ्तशा बेगम की भी क्रांति में महत्वपूर्ण भूमिका रही थी।[20]

क्रान्ति के समय तमाशे व नौटकियों के माध्यम से महिलाओं ने लोगों को जागरूक किया इन महिलाओं में सफाई कामगार समुदाय की भी महिलायें थी।[21]

इस प्रकार समाज के अति पिछड़े समुदाय के लोगों ने 1857 की क्रान्ति में प्रमुख रूप से भाग लेकर न केवल देश को स्वतंत्र कराने में अपना योगदान दिया अपितु अपने समुदाय के लिए प्रेरणा के स्रोत भी बनें।

संधर्व सूची

1. मोईनुद्दीन हसन–गदर 1857, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली–7। भूमिका से आचार्य दीपांकर–स्वाधीनता आंदोलन और मेरठ, 1995, पृष्ठ–145।
2. साक्षात्कार–श्री इन्द्रपाल प्रपोत्र महावीरा देवी, गाँव मुण्डभर, मु0नगर, दिनांक 01.06.2010।
3. आचार्य दीपांकर–स्वाधीनता आन्दोलन और मेरठ, पृष्ठ 43।
4. पूर्वोक्त पृ0– 43।
5. साक्षात्कार– श्री इन्द्रपाल प्रपोत्र महावीरा देवी, वही।
6. डी0सी0 दिनकर– स्वतन्त्रता संग्राम में अछूतों का योगदान, गौतम बुक सेन्टर, दिल्ली, 2007, पष्ठ 44।
7. डा0 मंजू सुमन–दलित महिलाएं, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004, पृष्ठ–215।
8. रघुनंदन वर्मा, अरूण गुप्त–भारतीय।
9. पूर्वोक्त, पृष्ठ–42।
10. साक्षात्कार–श्रीराजाराम शास्त्री (सामाजिक कार्यकर्ता वाल्मीकि समाज)–भरतिया कालोनी, मु0नगर, दिनांक 28.10. 2007।
11. रघुनंदन वर्मा, अरूण गुप्त–भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में मु0नगर का योगदान, 1997, पृ0 46।
12. आचार्य दीपांकर–स्वाधीनता आंदोलन और मेरठ, 1995, पृष्ठ–147–148।
13. डा0 मंजू सुमन–दलित महिलाएं, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004, पृष्ठ–211।
14. पूर्वोक्त, पृष्ठ–212।
15. पूर्वोक्त, पृष्ठ–212।
16. पूर्वोक्त, पृष्ठ–213।
17. एम0आर0 विद्रोही–दलित दस्तावेज, दलित साहित्य प्रकाशन संस्था, नई दिल्ली, 1989,।
18. पृष्ठ–82–83।
19. पूर्वोक्त, पृष्ठ–90–91।
20. Who's who of Indian martyrsA
21. सतनाम सिंह 1857 की क्रान्ति में दलितों का योगदान। पृष्ठ–97।